International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

संसाधन विवरण एवं अभिगम (RDA): डिजिटल युग में ग्रंथसूची नियंत्रण का परिवर्तन

(Resource Description and Access (RDA): Transforming Bibliographic Control in the Digital Era)

पंकज के. भारद्वाज

पुस्तकालयाध्यक्ष
आर.डी.एस. पब्लिक गर्ल्स कॉलेज, रेवाड़ी, हरियाणा

सारांश(Abstract)

संसाधन विवरण एवं अभिगम (Resource Description and Access - RDA) आधुनिक पुस्तकालयों, अभिलेखागारों और संग्रहालयों में सूचना संसाधनों के विवरण एवं अभिगम के लिए विकसित एक अंतरराष्ट्रीय मानक है। यह AACR2 (Anglo-American Cataloguing Rules, Second Edition) का उत्तराधिकारी है। RDA डिजिटल एवं मुद्रित दोनों प्रकार के संसाधनों के लिए उपयुक्त है तथा FRBR और IFLA Library Reference Model (LRM) जैसे वैचारिक मॉडलों पर आधारित है। यह ग्रंथसूची अभिलेखों को अधिक व्यवस्थित, उपयोगकर्ता केंद्रित और अंतर-संचालनीय बनाता है।

प्रमुख शब्द (Keywords): RDA, ग्रंथसूची नियंत्रण, मेटाडेटा, MARC 21, BIBFRAME, डिजिटल पुस्तकालय, लिंक्ड डेटा।

1. परिचय (Introduction)

ग्रंथसूची नियंत्रण (Bibliographic Control) पुस्तकालय विज्ञान का एक महत्वपूर्ण कार्य है, जिसके अंतर्गत पुस्तकालय में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के सूचना संसाधनों का **व्यवस्थित विवरण, संगठन, पहचान और उपयोगकर्ताओं तक उनकी सरल एवं प्रभावी पहुंच** सुनिश्चित की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि उपयोगकर्ता पुस्तकालय में उपलब्ध किसी भी संसाधन को उसके लेखक, शीर्षक, विषय, प्रकाशक, संस्करण, तिथि तथा अन्य विवरणों के आधार पर आसानी से खोज सकें। ग्रंथसूची नियंत्रण के माध्यम से पुस्तकालय संग्रह को व्यवस्थित रूप प्रदान किया जाता है तथा सूचना संसाधनों के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा मिलता है।पारंपरिक रूप से AACR2 का उपयोग पुस्तकालयों में सूचीकरण के लिए किया जाता था, लेकिन डिजिटल संसाधनों, ई-पुस्तकों, संस्थागत रिपॉजिटरी और ऑनलाइन डेटाबेस के विकास के कारण एक अधिक लचीले मानक की आवश्यकता महसूस हुई।

इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए **Resource Description and Access (RDA)** का विकास किया गया। RDA को वर्ष **2010 में AACR2 के स्थान पर विकसित किया गया**। यह एक अंतरराष्ट्रीय सूचीकरण मानक है, जिसे आधुनिक डिजिटल सूचना वातावरण की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से तैयार किया गया। RDA का विकास **Joint Steering Committee for Development of RDA (JSC)** द्वारा किया गया, जिसमें American Library Association (ALA), Library of Congress (LC), Canadian Committee on Cataloguing (CCC) तथा अन्य प्रमुख पुस्तकालय संगठनों का योगदान रहा।

2. ग्रंथसूची नियंत्रण का विकास (Evolution of Bibliographic Control)

प्रारंभिक समय में पुस्तकालयों में कार्ड कैटलॉग का प्रयोग किया जाता था। बाद में AACR और AACR2 जैसे मानकों ने सूचीकरण में एकरूपता स्थापित की। डिजिटल युग में विभिन्न प्रकार के संसाधनों के कारण आधुनिक मेटाडेटा मानकों की आवश्यकता हुई, जिसके परिणामस्वरूप RDA का विकास हुआ।

3. RDA का विकास(Development of RDA)

RDA का विकास RDA Steering Committee द्वारा किया गया। यह FRBR, FRAD और IFLA Library Reference Model पर आधारित है। RDA में कार्य (Work), अभिव्यक्ति (Expression), अभिव्यक्ति रूप (Manifestation), प्रति (Item), व्यक्ति (Person) और संस्थाओं के बीच संबंधों को महत्व दिया जाता है।

4. RDA के सिद्धांत एवं विशेषताएँ(Principles and Key Features of RDA)

RDA के मुख्य सिद्धांत हैं:

- उपयोगकर्ता केंद्रित विवरण
- अंतरराष्ट्रीय उपयोगिता
- सभी प्रकार के संसाधनों का विवरण
- मेटाडेटा का आदान-प्रदान
- लिंक्ड डेटा तकनीक का समर्थन

RDA की प्रमुख विशेषताएँ:

- मुद्रित एवं डिजिटल संसाधनों के लिए उपयोगी
- MARC 21, Dublin Core और BIBFRAME के साथ अनुकूल
- बेहतर खोज एवं संसाधन पहचान में सहायता

5. RDA Toolkit, MARC 21 और BIBFRAME

RDA Toolkit एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जिसमें सूचीकरण संबंधी निर्देश, नियम और नवीनतम जानकारी उपलब्ध होती है। MARC 21 ग्रंथसूची डेटा को मशीन-पठनीय रूप में संरक्षित करता है जबकि RDA सामग्री विवरण के नियम प्रदान करता है। BIBFRAME भविष्य की लिंक्ड डेटा आधारित ग्रंथसूची प्रणाली है।

6. डिजिटल पुस्तकालयों एवं शैक्षणिक पुस्तकालयों में RDA

डिजिटल पुस्तकालयों में ई-पुस्तकें, शोध प्रबंध, डिजिटल संग्रह और संस्थागत रिपॉजिटरी के लिए उच्च गुणवत्ता वाले मेटाडेटा की आवश्यकता होती है। RDA इन संसाधनों के बेहतर प्रबंधन और खोज में सहायता करता है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय RDA आधारित सूचीकरण द्वारा अपने संग्रह को अधिक प्रभावी बना रहे हैं।

7. RDA के लाभ एवं चुनौतियाँ(Benefits and Challenges of RDA)

लाभ:

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानक
- बेहतर संसाधन खोज
- डिजिटल संसाधनों के लिए उपयुक्त
- मेटाडेटा साझाकरण में सहायता
- लिंक्ड डेटा के लिए उपयोगी

चुनौतियाँ:

- पुस्तकालय कर्मियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता
- पुराने AACR2 रिकॉर्ड का परिवर्तन
- कार्यान्वयन लागत
- तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता

8. RDA एवं लिंक्ड डेटा का भविष्य

भविष्य में पुस्तकालय मेटाडेटा लिंक्ड डेटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सिमेंटिक वेब तकनीकों से अधिक जुड़ेगा। RDA इन तकनीकों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। BIBFRAME और RDF जैसी तकनीकों के साथ इसका उपयोग सूचना खोज को और बेहतर बनाएगा।

9. निष्कर्ष

Resource Description and Access (RDA) ने ग्रंथसूची नियंत्रण (Bibliographic Control) की पारंपरिक अवधारणा को एक नई दिशा प्रदान करते हुए इसे आधुनिक डिजिटल सूचना वातावरण के अनुरूप परिवर्तित किया है। यह केवल सूचीकरण नियमों का एक समूह नहीं है, बल्कि सूचना संसाधनों के प्रभावी संगठन, पहचान और उपयोगकर्ता पहुंच को सुनिश्चित करने वाला एक व्यापक अंतरराष्ट्रीय मानक है। RDA ने पारंपरिक मुद्रित संसाधनों के साथ-साथ ई-पुस्तकों, ई-जर्नल्स, डिजिटल रिपॉजिटरी, ऑनलाइन डेटाबेस और अन्य इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के विवरण को अधिक सरल, व्यवस्थित और प्रभावी बनाया है।

RDA का प्रमुख उद्देश्य उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधनों की खोज, पहचान, चयन और प्राप्ति को आसान बनाना है। इसकी लचीली संरचना विभिन्न प्रकार के सूचना संसाधनों के लिए उपयुक्त है और यह आधुनिक मेटाडाटा प्रणालियों के साथ आसानी से कार्य कर सकता है। डिजिटल पुस्तकालयों, विश्वविद्यालय पुस्तकालयों और संस्थागत रिपॉजिटरी में RDA का उपयोग सूचना संसाधनों के बेहतर प्रबंधन, साझा करने और खोज क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वर्तमान समय में जब पुस्तकालय सेवाएँ तेजी से डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), लिंक्ड डेटा (Linked Data) और सेमांटिक वेब (Semantic Web) की ओर बढ़ रही हैं, तब RDA की उपयोगिता और अधिक बढ़ गई है। भविष्य में नई तकनीकों के विकास के साथ RDA सूचना संगठन एवं ज्ञान प्रबंधन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में कार्य करेगा। इस प्रकार, RDA आधुनिक पुस्तकालयों के लिए एक ऐसा मानक है जो पारंपरिक ग्रंथसूची नियंत्रण को डिजिटल युग की आवश्यकताओं के साथ जोड़ते हुए भविष्य के पुस्तकालयों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

REFERENCES:

1. Tillet, B. B. (2004). *What is FRBR? A conceptual model for the bibliographic universe*. Library of Congress. https://www.loc.gov/cds/downloads/FRBR.PDF
2. International Federation of Library Associations and Institutions. (2017). *IFLA Library Reference Model (LRM): A conceptual model for bibliographic information*. IFLA. https://www.ifla.org
3. International Federation of Library Associations and Institutions. (2009). *Functional Requirements for Bibliographic Records (FRBR): Final Report*. IFLA Study Group on the Functional Requirements for Bibliographic Records.
4. Library of Congress. (2017). *BIBFRAME frequently asked questions*. Library of Congress. https://www.loc.gov/bibframe/
5. Coyle, K. (2010). *Understanding the Semantic Web: Bibliographic data and metadata*. Library Technology Reports, 46(1), 5–15.
6. Dunsire, G., Hillmann, D., & Phipps, J. (2012). *Reconsidering the design of MARC records: The role of RDA and linked data*. Cataloging & Classification Quarterly, 50(5–7), 562–583.
7. Danskin, Alan. 2013. "Linked and Open Data: RDA and Bibliographic Control". JLIS.It 4 (1):147. https://doi.org/10.4403/jlis.it-5463.